भा॰वा॰अ॰शि॰प॰-हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान, शिमला में अंतर्राष्ट्रीय पर्वत दिवस कार्यक्रम की रिपोर्ट

Report on International Mountain Day Programme at ICFRE-Himalayan Forest Research Institute, Shimla

---

@मिशन लाइफ**#अंतर्राष्ट्रीय पर्वत दिवस** का मुख्य उद्देश्य पर्वतों के संरक्षण के साथ-साथ सतत विकास को प्रोत्साहित करना है। अंतरराष्ट्रीय समुदाय को सतत पर्वतीय विकास के महत्त्व को उजागर करने के लिए इस दिन सभी स्तरों पर कार्यक्रम आयोजित किए जाते हैं। सयुंक्त राष्ट्र महासभा के निर्णय पश्चात 11 दिसंबर 2003 को अंतरराष्ट्रीय पर्वत दिवस पहली बार मनाया गया, तभी से हर वर्ष अलग-अलग थीम पर यह दिवस मनाया जाता है। भा॰वा॰अ॰शि॰प॰-हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान,शिमला द्वारा अंतर्राष्ट्रीय पर्वत दिवस, 11 दिसम्बर - 2023 को संस्थान में मनाया गया। **डॉ. जगदीश सिंह,** वैज्ञानिक, प्रभागाध्यक्ष, विस्तार प्रभाग ने सभी प्रतिभागियों का स्वागत किया और इस दिवस के महत्व के बारे में जानकारी दी। उन्होंने बताया कि इस वर्ष का थीम "*पर्वतीय पारिस्थितिकी तंत्र को बहाल करना*" (Restoring Mountain Ecosystems) है। डॉ. सिंह ने कहा कि पहाड़ स्वच्छ जल का स्त्रोत हैं। उन्होंने पर्यावरण की रक्षा हेतु ठोस अपशिष्ट प्रबंधन की नीति की आवश्यकता पर भी ज़ोर दिया और हिमालय पर्वत प्रणाली के सतत विकास के लिए कार्बन फुटप्रिंट को कम करने के उपायों पर प्रकाश डाला। मुख्य वक्ता **डॉ॰ वनीत जिष्टू,** वैज्ञानिक ने "लद्दाख पर्वतों में पौधों के सतत संरक्षण की पारंपरिक और सांस्कृतिक प्रथाओं" पर एक प्रस्तुति दी। उन्होंने अपने व्यापक अनुभव साझा किए कि कैसे स्थानीय समुदाय लद्दाख क्षेत्र में पहाड़ों के स्थायी प्रबंधन में योगदान देते हैं। उन्होंने बताया कि पर्वत दुनिया की 15% आबादी का घर हैं और दुनिया की लगभग आधी जैव विविधता वाले हॉटस्पॉट पर्वतों में स्थित है। पृथ्वी सतह का लगभग 27% क्षेत्र पर्वतों द्वारा आच्छादित है और विश्व के जैव विविधता के महत्वपूर्ण भाग को आवास प्रदान करते हैं। इसके अलावा, पर्वत जलवायु विनियमन, कार्बन पृथक्करण और सांस्कृतिक विविधता में योगदान करते हैं। दुर्भाग्यवश, वनों की कटाई, खनन और शहरीकरण जैसी मानव गतिविधियों ने पर्वतीय क्षेत्रों में आवास की क्षीणता, मृदा अपरदन और जैव विविधता की हानि का कारण बनाया है। उन्होनें बताया कि वनप्रवर्धन और वृक्षारोपण: स्वदेशी वृक्ष प्रजातियों का रोपण करना दूषित भूमि को पुनर्स्थापित करने में मदद करता है, मृदा अपरदन को रोकता है और विभिन्न जैव विविधता के लिए आवास प्रदान करता है। डॉ. जिष्टू ने लद्दाख क्षेत्र के आर्य समाज से संबन्धित द्रोकपा/ब्रोकपा और मोरे प्लेन्स के चांगपा समुदाय का उदाहरण दे कर स्थानीय समुदायों के पर्वतीय पारिस्थितिकी के संरक्षण में योगदान पर चर्चा की। हरित गैस अंतर्गतों/ स्त्रोतों को कम करने और जलवायु परिवर्तन के अनुकुलन के लिए उपायों को लागू करना पर्वतीय क्षेत्रों के संरक्षण के लिय अत्यंत महत्वपूर्ण है। उन्होंने कहा कि स्थानीय समुदाय की भागीदारी इस प्रकार की पहलों की सफलता के लिए महत्वपूर्ण है। संस्थान के निदेशक डॉ॰ संदीप शर्मा, ने हिमालयी पारिस्थितिकी तंत्र के संरक्षण के लिए बहुत प्रासंगिक धार्मिक और सांस्कृतिक मुद्दों पर भी प्रकाश डाला। उन्होंने मानव जाति की भलाई के लिए हिमालयी पारिस्थितिकी तंत्र की सुरक्षा के लिए सभी से कार्बन फुटप्रिंट को कम करने का आग्रह किया। इसके अलावा उन्होंने कहा कि भारतीयों ने पर्वतों के महत्व को आदिकाल से ही पहचान लिया था। प्राचीन काल से हो रही गोवर्धन पूजा और विभिन्न पवित्र पहाड़ों की धार्मिक यात्रा व परिक्रमा इस बात

को इंगित करते हैं। हिमाचल के श्रीखंड महादेव, मणिमहेश और किन्नर कैलाश यात्रा भी इसी कड़ी को इंगित करते हैं। डॉ॰ शर्मा ने शिमला और सोलन क्षेत्र में बहने वाली हिमाचल प्रदेश की सबसे प्रदूषित नदी अश्वनी खड्ड की स्थिति पर चिंता व्यक्त की और कहा कि इसके सुधार के लिए हर संभव उपाए किए जाने चाहिए। डॉ॰ शर्मा शर्मा ने कहा कि वनों के दोहन से अल्पावधि के लिए तो लाभ लिया जा सकता है परंतु स्वस्थ वन पारिस्थितिकी स्थायी अर्थव्यवस्था के लिए जरूरी है। कार्यक्रम के अंत में डॉ. जगदीश सिंह, ने मुख्य वक्ता, संस्थान के निदेशक, वैज्ञानिकों, अधिकारियों, कर्मचारियों तथा शोधार्थियों का कार्यक्रम में शामिल होने के लिए धन्यवाद दिया। श्री कुलवंत राय गुलशन, वरिष्ठ तकनीशियन और श्री स्वराज सिंह, तकनीशियन ने कार्यक्रम के सफल आयोजन में भूमिका निभाई।

कार्यक्रम के छायाचित्र

मीडिया मे प्रकाशित संबन्धित खबर

मंथन **हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान शिमला ने मनाया अंतरराष्ट्रीय पर्वत दिवस**

पर्वतीय पारिस्थितिकी तंत्र को बहाल करना जरूरी

सिटी रिपोर्टर–शिमला

हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान शिमला द्वारा सोमवार को अंतरराष्ट्रीय पर्वत दिवस मनाया गया। डा. जगदीश सिंह वैज्ञानिक प्रभाग अध्यक्ष विस्तार प्रभाग ने बताया कि इस वर्ष का थीम पर्वतीय पारिस्थितिकी तंत्र को बहाल करना है। पहाड़ स्वच्छ जल का स्रोत हैं। उन्होंने पर्यावरण की रक्षा हेतु ठोस अपशिष्ट प्रबंधन की नीति की आवश्यकता पर भी जोर दिया। इस अवसर पर मुख्य वक्ता डॉ. वनीत जिष्टू, वैज्ञानिक ने पर्वतीय पारिस्थितिकी तंत्र को बहाल करना विषय पर व्याख्यान दिया। उन्होंने बताया कि पर्वत दुनिया की 15 अनुपात आबादी का घर हैं और दुनिया की लगभग आधी जैव विविधता वाले हॉटस्पॉट पर्वतों मे स्थित है। डा. जिष्टूने अंतरराष्ट्रीय पर्वत दिवस के अवसर पर हर महिला पुरुष से पर्वत से जुड़ी एक गतिविधि करने का आग्रह किया।

पृथ्वी के भूमि सतह का लगभग 27 अनुपात क्षेत्र पर्वतों द्वारा आच्छादित है और विश्व के जैव विविधता के महत्त्वपूर्ण भाग को आवास प्रदान करते हैं। इसके अलावा पर्वत जलवायु विनियमन, कार्बन पृथक्करण, और सांस्कृतिक विविधता में योगदान करते हैं। दुर्भाग्यवश, वनों की कटाई, खनन और शहरीकरण जैसी मानव गतिविधियों ने पहाडी क्षेत्रों में आवास की क्षीणता, मृदा अपघात और जैव विविधता की हानि का कारण बनाया है। उन्होनें बताया कि वन्यप्रवर्धन और वृक्षारोपण स्वदेशी वृक्ष प्रजातियों का रोपण करना दूषित भूमि को पुनर्स्थापित करने में मदद करता है। मृदा अपघात को रोकता हैं, और विभिन्न जैव विविधता के लिए आवास प्रदान करता है। डा. जिष्टू ने लद्दाख क्षेत्र के आर्य समाज से संबंधित द्रुकपा व ब्रोकपा और मोरे प्लेन्स के चांगपा समुदाय का उदाहरण दे कर स्थानीय समुदायों के पर्वतीय पारिस्थितिकी के संरक्षण में योगदान पर चर्चा की। हरित गैस अंतर्गतों व स्रोतों को कम करने और जलवायु परिवर्तन के अनुकूलन के लिए उपायों को लागू करना पर्वतीय क्षेत्रों के संरक्षण के लिए अत्यंत महत्त्वपूर्ण है।उन्होने कहा कि स्थानीय समुदाय की भागीदारी इस प्रकार के पहलों की सफलता के लिए महत्वपूर्ण है। संस्थान के निदेशक डॉ. संदीप शर्मा,ने बताया कि पर्वतीय क्षेत्र जैव विविधता के भंडार हैं और यह जीवन और पर्यावरण के लिए बहुत महत्त्वपूर्ण है। डा. शर्मा ने शिमला और सोलन क्षेत्र में बहने वाली हिमाचल की सबसे प्रदूषित नदी अश्वनी खड्ड की स्थिति पर चिंता व्यक्त की और कहा कि इसके सुधार के लिए हर संभव उपाय किए जाने चाहिए। डा. शर्मा शर्मा ने कहा कि वनों के दोहन से अल्पावधि के लिए तो लाभ लिया जा सकता है परंतु स्वस्थ वन पारिस्थितिकी स्थायी अर्थव्यवस्था का आश्वासन देती है। इस अवसर पर संस्थान के वैज्ञानिक, अधिकारी, कर्मचारी एवं शोधार्थी उपस्थित रहे।

दिव्य हिमाचल

शिमला : हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान द्वारा आयोजित अंतर्राष्ट्रीय पर्वत दिवस के दौरान कार्यक्रम में भाग लेते अधिकारी व अन्य। (नरेश)

पहाड़ी क्षेत्रों में मानव गतिविधियों से बढ़ रही भूस्खलन जैसी घटनाएं : डा. जिष्टू

शिमला, 11 दिसम्बर (भूपिन्द्र) वनों की कटाई, खनन और शहरीकरण जैसी मानव गतिविधियों से पहाड़ी क्षेत्रों में जहां भूस्खलन जैसी घटनाएं बढ़ रही हैं, वहीं जैव विविधता को भी नुक्सान हो रहा है। पौधारोपण विशेषकर स्वदेशी वृक्ष प्रजातियों के लगाने से जहां भूस्खलन जैसी घटनाओं को रोका जा सकता है, वहीं यह जैव विधिता के संरक्षण में भी सहायक होगा। यह बात हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान शिमला (एच.एफ.आर.आई.) के वैज्ञानिक डा. वनीत जिष्टू ने सोमवार को संस्थान द्वारा आयोजित अंतर्राष्ट्रीय पर्वत दिवस के मौके पर लोगों को संबोधित करते हुए कही।

उन्होंने बताया कि पर्वतीय क्षेत्रों में दुनिया की केवल मात्र 15 फीसदी आबादी ही रहती है, जबकि दुनिया की लगभग 50 फीसदी जैव विधिता पर्वतों में ही पाई जाती है। ऐसे में उन्होंने पर्वत दिवस पर पर्वतीय क्षेत्रों में रहने वाले लोगों से इन क्षेत्रों से जुड़ी गतिविधियों को आवश्यक करने का आह्वान किया।

एच.एफ.आर.आई. के निदेशक डा. संदीप शर्मा ने इस मौके पर कहा कि पर्वतीय क्षेत्र जैव विविधता के भंडार है, जो जीवन व पर्यावरण के लिए महत्वपूर्ण है। उन्होंने कहा कि भारतीयों ने पर्वतों के महत्व को आदिकाल से पहचान लिया था। इसका उदाहरण गोवर्धन पूजा, श्रीखंड महादेव, मणिमहेश और किन्नर कैलाश यात्रा है। उन्होंने शिमला व सोलन जिले में बहने वाली राज्य की सबसे प्रदूषित नदी अश्वनी खड्ड की स्थिति पर चिंता व्यक्त की तथा इसके सुधार के लिए हर संभव उपाय करने की आवश्यकता पर बल दिया।

पंजाब केसरी

****